सत्ता के आंतरिक उद्योग ...

हुआ।

Part III H1
p. VIII

Nalanda copper plate (नालंदा ताम्रपत्र)

बंगाल के पालवंश के शासकों में देवपाल को एक विजयी सम्राट के रूप में माना जाता है। देवपाल बौद्ध धर्म से सम्बन्धित था। इसने नालंदा के बौद्ध भिक्षुओं के व्यय के लिए 5 ग्राम दान में दिया था। 5 वीं शताब्दी के बाद नालंदा अंतरराष्ट्रीय ख्याति पा चुका था और शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र के रूप में यह स्थित था। गुप्त वंशीय शासकों और पालवंशीय शासकों ने नालंदा को आर्थिक सहायता देकर इसके उन्नति के लिए अथक प्रयास किया। सम्राट देवपाल के द्वारा उसके शासन के 35 वर्ष में यह ताम्रपत्र लेख लिखवाया गया जो 1921 ई० में खुदाई के फलस्वरूप बिहार से प्राप्त हुआ है। इसकी लिपि देवनागरी है। एवं भाषा संस्कृत है। यह ताम्रपत्र लेख गद्य शैली में लिखा गया है। ताम्रपत्र लेख गद्य शैली में लिखा गया है लेकिन अंतिम खंड पद्य में है। इस लेख से पता चलता है कि पाल राजाओं का सम्बन्ध दक्षिणपूर्वी एशिया के देशों के साथ था।

प्रस्तुत लेख की व्याख्या

से आरम्भ होता है। इस ताम्र पत्र के 20वें श्लोक में भिक्षुओं के रहने के लिए नालंदा में एक विहार का निर्माण जावा के सम्राट बालपुत्र द्वारा किया गया था। बालपुत्र देव शैलेन्द्र वंश के थे जो स्वर्णद्वीप का राजा बतलाया गया है। इस लेख में यवद्वीप और स्वर्णद्वीप क्रमशः जावा और सुमात्रा के लिए उल्लेख किया गया है। शैलेन्द्र वंश का राज्य 8वीं शताब्दी के अंतिम भाग में था। एक लेख मलाया के लिगोर तथा जावा के कालसन नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसमें बालपुत्र देव के नाम का उल्लेख किया गया है। जावा के राजा के द्वारा विहार के निर्माण के पश्चात उसकी देखभाल एवं भिक्षुओं के भरण पोषण तथा निर्वाह के लिए देवपाल से आग्रह किया था जिसके फलस्वरूप देवपाल ने उनके आग्रह पर पाँच ग्राम दान में दिया। ताम्र पत्र पर लिखा है कि श्री देवपाल देवस्य तथा नीचे नालंदा की मुहर और धर्मचक्र का चिह्न इसकी सत्यता को प्रमाणित करता है। साथ ही देवपाल के बौद्ध धर्म के प्रति विशेष आस्था को भी प्रकाशित करता है। यह ताम्रपत्र अनेकों दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

(1) देवपाल के समकालीन शासक शैलेन्द्रवंशीय सम्राट श्री बालपुत्र देव थे।

(2) स्वर्णद्वीप का उल्लेख इस ताम्रपत्र में किया गया है।

(3) विश्वविद्यालय के लिए सम्राट के द्वारा दान का उल्लेख प्राप्त होता है।

(4) दोनों सम्राट की नामावली दी गयी है।

Scanned with CamScanner

नालंदा के विहार के लिए 4 ग्रामों का उल्लेख और इन ग्रामों के विषय में विस्तृत वर्णन ... विहार की कार्यपद्धति का भी पता चलता है। इन गांवों की आय से धर्मगुरुओं को शिक्षा तथा विहार में निवास करने वाले भिक्षुओं के कपड़े रहन खाने पीने, दवा दारू में व्यय किया जाता था। आय का एक भाग भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जाता था।

इन गांवों का उल्लेख इस प्रकार राजगीर विषय में नंदिवनक, मणिवाटक, नटिका ग्राम नगर भुक्ति के हस्तिग्राम गया विषय के पालक। डा० हीरानन्द शास्त्री ने इन गांवों की तुलना वर्तमान गांवों से किया है।

नन्दिवाटक — नवनवेना
मनिवाटक — मनिआवा
नटिका ग्राम — नदी पोखरा हस्तिग्राम हथुई
मैनरे है पास का आधुनिक हावी चोला

ताम्रलेख के आधार पर स्वर्णद्वीप के सम्राट बालपुत्र देव बलिराजा के नाम से विख्यात था। उसकी नगरी का नाम तगर था। दक्षिण पूर्वी एशिया के अधिकांश क्षेत्रों पर इसका अधिपत्य था। जावा नरेश दूत का नाम बलवर्मा उल्लिखित है। जिसके सम्बन्ध में विशेष जानकारी नहीं दी गयी है। लेख में उसे मंडलाधिपति कहा गया है। धर्मपाल के स्वामिन पुत्र राजपुत्र के लिए इस नाम के व्यक्ति को अधिपति कहा गया है। बाद आधार पर था यह अनुमान किया जाता है कि गंगा घाटी के निचले भाग के आसपास

देवराज के बीच अवश्य सम्बन्ध रहा हो और इसी से जावा के शासक बालपुत्रदेव ने बौद्ध भिक्षुओं के रहने के लिए विहार का निर्माण करवाया था। बौद्ध धर्म के प्रति उसकी असीम श्रद्धा थी। लंका के शासक ने धर्मपाल को बोधगया में बौद्ध मठ बनवाया था। उस विहार का संरक्षण देवपाल ने किया।

इस प्रकार का प्रमाण प्राप्त है। पाल राजवंश शासकों की मैत्री सम्बन्ध सैलेन्द्र वंशीय शासकों के साथ। राजा राजप्रधान के अभिलेख से पता चलता है कि श्री विजय के स्वामी नागपाटन ने एक विहार बनवाया था जिसका लेख नालंदा ताम्रपत्र से मिलता जुलता है। पालनरेश के समय बौद्ध धर्म का उन अत्यधिक प्रचार हुआ फलस्वरूप विदेशी शासकों ने बौद्ध विहारों की स्थापना करवायी तथा राजाओं से दान देने का आग्रह करवाया।

नालंदा ताम्रपत्र में प्रारम्भिक पाल वंशीय शासकों और उनके वंशजों का पता चलता है। पाटलिपुत्र के लिए नगर मुक्ति, राजगृह एवं गया विषय शब्द का प्रयोग किया गया है। पालकालीन शासन व्यवस्था के अन्तर्गत राज्य विभाग और मुक्ति के बीच विषय की अलग इकाई ग्राम की लेख में कर्मचारियों का उल्लेख है। राजराजानक, राजपुत्र, राजामात्य, महाकर्ता, दूत, महाकर्माध्यक्ष, महाप्रतिहार, महासामन्त, साधु साधनिक इत्यादि उल्लेख। यह लेख के द्वारा विभिन्न भागों से सम्बन्धित है। एक प्रकार से ताम्रपत्र का महत्व अत्यधिक है।